Impact Factor 2.147

ISSN 2349-638x

Reviewed International Journal

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly Publish Journal

VOL-III ISSUE- IV Apr. 2016

Address
•Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
•Tq. Latur, Dis. Latur 413512
•(+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
•aiirjpramod@gmail.com

Website
•www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

"युग द्रष्टा कबीर की संत साहित्य को देन"

कमलेश दगडू सपकाल
शोधछात्र विद्यावाचस्पति
उ.म.वि.जलगाँव
पता : ग्राम सिपोरा बाजार तहसिल भोकरदन जिला जालना
(महाराष्ट्र)

भक्तिकाल की निर्गुण धारा के श्रेष्ठ कवि संत कबीर रामानन्द के शिष्य थे | हिंदी साहित्य के आदिकालीन भक्ति साधना को अधिक सरस एवं सरल बनाने का कार्य कबीर ने किया हैं | जिस समय कबीर आविर्भुत हुए थे, उस समय भारत में इस्लाम सम्प्रदाय का आगमन हो चुका था | हिंदु और मुसलमानों के धर्म प्रेम के कारण सारा भारतीय समाज क्षुब्ध हो गया था | ऐसी परिस्थीयों में कबीर का सिध्दांत था कि देवता किसी एक जाती की सम्पती नही है, वे सबके हैं | सुयोग से कबीर को हिंदु एवं मुसलमान इन दोनों धर्मो के संस्कार मिले थे | कबीर की भक्ति में निर्गुण तथा सगुण ब्रहम के दोनों रुपों की चर्चा दिखायी देती है | कबीर के राम धनुर्धरधारी साकार राम न होकर ब्रहमा के पर्याय हैं | कबीर से पुर्व ही हमारे भारत देश में संत परंपरा विदयमान थी | इस परंपरा में कई संतो के विवरण उपलब्ध है यथा नामदेव, जयदेव, सेना, रामानंद और कबीर भी इसी परंपरा के एक सिध्दहस्त कवि थे |

आज से लगभग छ: सदी पुर्व एक जलाशय के पास नीरु और नीमा इस जुलाहा दम्पति को एक नवजात शिशु प्राप्त हुआ था | उसे घर लाकर उसका नामकरण किया गया और नाम रखा कबीर| अरबी में कबीर महान परमात्मा का ही बोधक शब्द हैं | वे रामानन्द के शिष्य थे और सिकन्दर लोदी के समकालीन थे | कबीर पढ़े- लिखे न होने पर भी बहुश्रुत थे| हिंदु -मुसलमान के भेद-भाव से वे परे थे | बड़े-बड़े हिंदु संत और मुसलमान फकीर उनका उपदेश बड़ी श्रध्दा -भक्ति से सुनते थे | कबीर ने जो कुछ ज्ञान प्राप्त किया था वह अपनी आस्था और संत्सग से प्राप्त किया था | कबीर काशी में रहे, उन्होंने हिंदु धर्म में जन्म लिया लेकिन उनका पालन पोषण मुसलमान दम्पती ने किया | कबीर की भक्ति साधना में गुरु को उपास्य देवता ब्रह्म से भी प्रमुख स्थान था | गुरुदेव कौ अंग के एक दोहे में वें कहते हैं - "गुरु गोविंन्द दोओ खड़े, किसके लागु पाय बलिहारी गुरु अपने, गोविन्द दिया बताय ||" इस दोहे का आशय है कि गुरु और गोविन्द अर्थात् ईश्वर दोनों में से मैं गुरु की शरण में पहले जाऊँगा | क्योंकि गुरु व्दारा प्रदत्त ज्ञान से ही मैंने ईश्वर को पाया हैं|

मध्यकालीन भारतीयो परिस्थिति में हमारा भारतीय समाज अनेक बुराइयों से बेहाल था| छुआछुत रुढ़िवादिता, अन्धविश्वास और मिथ्याचार से ग्रस्त समाज हिंदु और मुसलमान में बटकर आपस में झगड़ रहा था| धार्मिक पाखण्ड़ अपनी चरमसिमा पर था और धर्म के ठेकेदार इन परिस्थितियों में अपनी स्वार्थ की रोटियां सेंक रहे थे | ऐसे समय में कबीर एक महात्मा या समाज सुधारक के रुप में आकर समाज में व्याप्त बुराईयों पर निर्भेकता से प्रहार किया | दोनों धर्मो के अनुयायियों को बिना किसी भेदभाव के फटकार के सदाचरण का उपदेश देकर सामाजिक समरसता की स्थापना की | नाथ पंथियों की हठयोग साधना की नीरसता को सरसता में परिवर्तित करने का महान कार्य कबीर ने किया हैं | इस संदर्भ में हजारीप्रसाद व्दिवेदी जी कहते हैं - "कबीरदास की वाणी वह लता हैं जो योग के क्षेत्र में भक्ति का बीज पड़ने से अंकुरित हुई थी | उन दिनों उत्तर के हठयोगियों और दक्षिण के भक्तों में मौलिक अंतर था | एक टुट जाता था, पर झुकता न था, दुसरा झुक जाता था पर टुटता न था | "१ इस प्रकार व्दिवेदी जी ने नाथ पंथियों के और कबीर की भक्ति साधना का अंतर दर्शाया हैं |

आचार्य हजारीप्रसाद व्दिवेदी कबीर के समर्थ आलोचक माने जाते हैं | वे ऐसे पहले विव्दान थे, जिन्होंने कबीर के बहुमुखी व्यक्तित्व तथा कृतित्व का यथायोग्य और सच्चा मुल्याकंन किया हैं | आचार्य हजारी प्रसाद व्दिवेदी ने कबीर के दार्शनिक विचारों की आलोचना की और कबीरदास की सच्ची महिमा को जन साधारण के लिए प्रस्तुत किया | कबीर की भक्ति साधना में निर्गुण ईश्वर पर विश्वास था | वे बहुदेववाद तथा अवतारवाद का विरोध करते थे | सदगुरु की महत्ता उनकी अदित साधना का आधार स्तंभ था | जाति - पॉति के भेदभाव तथा रूढियो ं और आड़म्बरों को उन्होंने खुलकर और ड़टकर विरोध किया रहस्यावाद और भजन तथा नामस्मरण उनके भक्तिभाव में दिखायी देता हैं| कबीर की भक्तिभावना में सदाचरण पर बल था | आचरण की शुध्दि के लिए वह संपुर्ण विकारों का परित्याग करना अनिवार्य मानते थे| वे विकारों के जनक कंचन और कामिनी को मानते थे| कामिनी अर्थात् नारी को वह माया का एक रुप

मानते थे| कबीर ने कुसंग को त्यागकर सत्संग करने पर बल दिया था| उनके विचारधारा के अनुसार जब तक मानव स्वयं के अहंकार को नही त्यागता तब तक तह परमात्मा को प्राप्त नहीं कर सकता|

कबीर एक महापुरुष थे| उनका साहित्य हिंदी साहित्य के लिए अनमोल देन हैं| समाज की अप्रिय रीति को देखकर उस पर प्रहार करना कबीर के स्वभाव की विशेषता थी | कबीर की वाणी में उतनी अचुकता एवं तीव्रता थी कि वह अभीष्ट सिध्द कर सके | उनका व्यंग्य बुध्दिप्रधान था| उनकी वाणी के बोल केवल तर्क पर आश्रित न थे | वे स्वयं अपने को जुलाहा कहने में संकोच नहीं करते थे| अपना पेट भरने के लिए समाज पर आश्रित होना उन्हें पसंद नही था | न ही धन संग्रह को महत्त्व देते थे | अपनी कमाई का कुछ अंश वह साधु सेवा में लगाते थे| अपने अमृतमय उपदेशों से उन्होंने जन मानस को सर्वसुखकारी धर्म दिखाया | धर्मिक विचारधराओं के आड़ंबर का खंड़न करके उन्होंने धर्म के जनसुलभ रुप को प्रस्तुत किया | सतगुरु के प्रेम में कबीर का विश्वास था| वह ईश्वर प्रेम के लिए विश्वास को ही कुंजी मानते हैं| यथा -" प्रेम न खेतों निपजै, प्रेम न हाट बिकाय | राजा- परजा जिस रूचे, सिर दे सो ले जाय ||"२ अर्थात् कबीर कहते हैं कि प्रेम यह खेत में उपजता नही या किसी बाजार में बिकता नहीं फिर भी इसे जो चाहे पा सकता हैं चाहे वह राजा हो या प्रजा| शर्त केवल इतनी हैं कि अपना शीश इसे सांपना होगा| अर्थात विश्वास रखना होगा| उपासना के लिए कृपा, क्षमा, औदार्य आदि उपास्य गुणों का होना महत्त्वपुर्ण मानते है | उनकी भक्ति के लिए आलम्बन की आवश्यकता नहीं थी | उन्होंने ईश्वर के गुणातीत निर्विकार, निराकार भाव को ही भक्ति का आलम्बन बनाया| निर्गुण निराकार ब्रहम ही उनके उपास्य थे| उनके अनुसार भक्ति ईश्वर किसी एक जगह स्थायी रुप में रह नहीं सकता वह अपने भक्तों के लिए घट घट में बसते हैं|

कबीर निर्गुण ब्रहम के साधक थे | उनकी भक्ति में सदगुरु का स्थान सर्वोपरि था| उनके अनुसार सदगुरु हमारे ज्ञ ानचक्षु खोल देते हैं| और साधक के लिए आवशयक है की, वह माया के आवरण को भेद कर परमात्मा में विलीन हो जाए | कबीर का परमात्मा किसी विशिष्ट भक्ति साधना का अभिलाषी नही हैं | उनका परमात्मा सबके लिए प्राप्य हैं,| केवल शुध्द भाव से शरण जाने की आवश्यकता हैं | उन्होंने भगवत् भक्ति के द्वार सभी के लिए खोले हैं| कबीर के साहित्य में सामाजिक सुधर संबंधी विचार अभिव्यक्त होते हैं| उन्होंने पाखंड़, आड़म्बरों एवं बहयाचारों का खेड़न किया | हिंदु - मुसलमानों में प्रचलित विचारों को कसकर फटकारा | जनता में फैले वैमनस्य के भाव को दुर कर समन्वयात्मक भावना को विकसित किया|

तत्कालीन परिस्थितियों में भारतीय समाज में प्रचलित समस्त अंधविश्वासों, रुढियों तथा मिध्या सिध्दातों व्दारा प्रचारित सामाजिक विषमताओं का मुलच्छेद करने का बीड़ा कबीर ने उठाया था| और निर्ममता पुर्वक सभी पाखंड़ो पर प्रहार किया | सत्विक आचरण का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए उन्होंने मांस भक्षण, मदयपान का निषेध किया | क्रोध, तृष्णा, हिंसा, कपट आदि कुप्रवृत्तियों का कट्टर विरोध किया | सच्चे अर्थों में कबीर ने मध्यकालीन समाज को पुर्नजिवित किया हैं | समान आर्थिक प्रणाली को सारे समाज में लागु करने के वे पक्षधर थे| प्रचलित अवधु योगी को उन्होंने खुब खरी खोटी सुनाई | साधना पध्दति का खंड़ण करते हुए उन्होंने कुलअभिमान और ब्रहमाचार पर भी आघात किए | पुर्न जन्म, कर्मकांड़, ढोंग, पाखंड़ और भेदभाव से समाज को मुक्त करने हेतु उन्हें विद्रोही रुप भी अपनाया था| कबीर देश प्रेमी थे| अपने देश के प्रकृति और सुंदरता का वर्णन भी उन्होंने किया हैं | यथा-"हम वासी उस देश के, जहॉ बारह मास विलास | प्रेम झरे विकसै केवल, तेजपुंज परकास ||"३

हिंदी साहित्य के हजार वर्षो की परंपरा में कबीर जैसे व्यक्तित्व वाला कवि दुर्लभ हैं | कबीर धर्म गुरु थे| अनकी वाणी से बहा हुआ आध्यात्मिक रस हमारे हिंदी साहित्य को साहित्य को पावन कर रहा हैं | संत कबीर अनुभवमार्गी थे| जन- सामातयों की तरह अत्याचार उन्होंने स्वयं भोगे थे| लोकमानस के दर्पण पर बेठा हुआ करीतियों का मैल साफ करने के लिए उन्होंने वेदशास्त्र, पुराण, स्मृति और कुराण की उपदियता पर ही प्रहार किया | उन्होंने धर्म के विकृत स्वरुप का विरोध किया | मानवता भरा आचरण ही वे धर्म का शुध्द स्वरुप मानते थे| कबीर का विद्रोह धर्मिकता के साथ सामाजिक तथा आर्थिक आधारों पर भी आक्रमक था| उन्होंने क्षमा,शील, दान, दया, सत्य, अपरिग्रह, धैर्य, संतोष, परहित, अहिंसा इन नेतिक मुल्यों का सदा ही पालन किया | धार्मिक मिथ्याचारियों पर प्रहार किया | पंड़ित, पुरोहित, महंतो के साथ साथ, काजी, मुल्ला, मौलवी, शेख, पीर आदि के असामाजिक आचरण को ललकारा | गौहत्या, अज्ञान, हिंसा इन कृरीतियों को उन्होंने विरोध किया | वस्तुत उनकी नजर में जो कुछ पड़ा उसे उन्होंने बख्शा नही, और उनकी नजर से कोई घटना छुटी नहीं| चाहे वह हिंदुओं का पोथी - पुराण हो या मुसलमानों के कर्मकांड़ अत संत कबीर सामाजिक बुराईयों के सशक्त विद्रोही नायक के रुप में दिखायी देते हैं|

कबीर हिंदी के पहले प्रतिबध्द कवि हैं| कबीर चुनौति के कवि हैं | कबीर के लिए कविता और जीवन में कोई अंतर नही हैं| कबीर ने काव्यरुपों के लिए दोहा, चौपाई, तथा रमैणी को अपनाया था| कबीर का साहित्य रमैनी, साखी और सबद इन तिन पद संग्रहों में विभाजित हैं| उनके काव्य में संत परंपरा के सभी गुण विशेष विदयमान हैं | प्रेम साधना, संसार अजित्यता, माया, हदय की शुध्दि की आवश्यता, साम्रादायिक एकता का प्रतिपादन आदि की चर्चा उनके काव्य में दिखायी देती हैं| बाहयाचारों का खुलकर विरोध करने

प्रवृत्ति उन्हें संत साहित्य की परंपरा में विशेष स्थान का अधिकारी बनती हैं| कबीर की कविता में रसानुभूति का आनंद पग पग पर प्राप्त होता हैं| यथास्थान शान्त, अद्‌भुत और श्रृंगार रसों की छटा भी दिखायी देती हैं | आत्मा को प्रेयसी और परआत्मा को प्रियतम मानकर उन्होंने बड़ी ही सरस सृष्टि की है| प्रतिको और उपयुक्त उपमानों अगोचर को भी गोचर रुप प्रदान करने की दृष्टि कबीर को प्राप्त थी| उनके प्रतिक और उलट बासियों हिंदी साहित्य की अमुल्य निधि हैं | कथनी और करनी के अभिन्नता ने कबीर के काव्य में अड़िग विश्वास का ऐसा स्वर भर दिया हैं, जो हिंदी साहित्य में अन्यन हैं| उनकी काव्य रचना उनके आत्मा की पुकार हैं| कबीर के काव्य में ज्ञान अनुभुती और कल्पना तिनों समिश्रन दृष्टि देता हैं| कबीर का काव्य सकंल्प पुर्वक रचित काव्य नहीं हैं| भक्त होने के कारण उन्होंने आध्यात्मिक साधना के लिए ही वाणी का माध्यम ग्रहण किया| दो टूक बात, दो टूक शैली में करने से उनकी कविता पारदर्शी हैं | कबीर का काव्य संकेत धर्मा काव्य हैं | उनके काव्य में उनके युग की समस्याओं की आग बड़ी प्रकरता से जल रही हैं| कबीर समरसता के पोषक कवि हैं | मनुष्य के रुप में पतिष्ठा देणे का आग्रह करने वालें हिंदी के पहिले कवि हैं| कबीर जी के भाषा में खड़ी बोली, अवधी और पुर्वी आदि कई बोलीओं का संमिश्रण हैं| कबीर की भाषा के विषय आचार्य हजारी प्रसाद व्दिवेदी कहते हैं " भाषा पर कबीर का जबरदस्त आधिकार था | वे वाणी के ड़िक्टेटर थे| जिस बात को उन्होने जिस रूप में प्रकट करना चाहा हैं उसे उसी रूप में भाषा से कहलवा लिया-नि गया हैं तो सीधे-सीधे, नहीं तो दरेरा देकर |" ४

कबीर का महान व्यक्तित्व काल को लाँघकर भविष्य का पद-चाप सुन सकता हैं और वर्तमान व्यवस्था में भविष्य का पद-चाप सुन सकता हैं और वर्तमान व्यवस्था में पड़ी दरारों को खोज कर उन्हें भरने का उपाय भी बताता हैं| कविता करनर कबीर का उद्देश्य नहीं था | अपनी बात को कहने के लिए उन्होंने कविता का सहारा लिया था| उनके काव्य में साहित्यशास्त्र के सिध्दांत की परिपुर्ति भले ही न हो, किन्तु अनुभूति की सचाई एवं अभिव्यक्ति का खरापन असमे विदयमान हैं, इसीलिए कबीर जनकवि के रूप में प्रसिध्द हुए| अंत मे कहा जा सकता हैं कि युग द्रष्टा कबीर के रुप में संथ सहित्य को अनमोल देन की प्रप्ति हुए हैं | कबीर का सहित्य अपने उपदेश अमृत से निंरतर जन मानस को सद्‌गति देता रहेगा, और पावनता का नीर बनकर बहता रहेगा |

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

१) कबीर, आचार्य हजारी प्रसाद व्दिवेदी - बारहवी आवृत्ति २०११, "राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली" पृष्ठ १२३
२) "कबीर ग्रंथावली" - श्री श्यामसुंदरदास पृष्ठ - ७०
३) 'सत्य कबीर की साखी' संकलन - वेकंटेश्वर प्रेस मंबई स. १९७७. पृष्ठ -६४
४) कबीर, आचार्य हजारीप्रसाद व्दिवेदी पृष्ठ - १७०.

ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com